जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

# ज्वालामुखी

सितंबर 1982

तृतीय अंक

सम्पादक : योशिआकि सुजुकि

Scanned with CamScanner

जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

# ज्वालामुखी

अंक 3 : सितम्बर 1982

सम्पादक
योशिआकि सुज़ुकि

तोक्यो, जापान

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :

योशिआकि सुजुकि
5-9 मात्सुयामा 3 च्योमे, कियोसे-शि,
तोक्यो, जापान
YOSHIAKI SUZUKI
5-9 Matsuyama 3 Chome, Kiyose-shi,
TOKYO, JAPAN

सहयोग राशि :

जापान में : 1,000 येन (डाक व्यय सहित)
विदेशों में : 5 डालर (डाक व्यय सहित)

मुद्रक :

विनोद पुस्तक मन्दिर
डॉ० रांगेय राघव मार्ग,
आगरा (भारत)

Scanned with CamScanner

# अनुक्रम


| | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | योसिआकि सुजुकि | 1 |
| 2. | जापान में हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ | तोमिओ मिज़ोकामि | 3 |
| 3. | शान्ति निकेतन और जापानी परम्परा | महेन्द्र साइजी माकिनो | 11 |
| 4. | फिल्मोत्सव 82 | तामाकि मात्सुओका | 15 |
| 5. | कहानी—चौराहे के बीच | तोमियो मिज़ोकामि | 21 |
| 8 | ममता कालिया की कहानियों में मध्यवर्गीय नारी का चित्रण | एदेरा कोदामा | 25 |
| 7. | "प्रेम कहानी" | माकोतो फुजिवारा | 28 |
| 8. | आपका पत्र | | 30 |
| 9. | भारत में दस महीने | चिहिरो तानाका | 34 |
| 10. | "काली वर्षा" | आकिओ ताकामुरा | 36 |
| 11. | आधुनिक जापानी साहित्य की प्रवृत्तियाँ (2) | शिगेओ आराकि | 40 |
| 12. | ब्लड ग्रुप और स्वभाव का सम्बन्ध | तेरुमित्सु माएकावा | 43 |
| 13. | समीक्षा | योसिआकि सुजुकि | 47 |
| 14. | परिशिष्ट | | 50 |


Scanned with CamScanner

जापानी उपन्यास

# "काली वर्षा"

आकिओ ताकामुर

इस वर्ष एक बार फिर 6 अगस्त का दिन आया और हिरोशिमा शहर पर की गई अणुबम बारी की याद ताज़ा कर गया। हर वर्ष इसी दिन अणुबम का शिकार हुए लोगों की आत्माओं की शान्ति के लिए हिरोशिमा में स्थापित शान्ति पार्क में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जाता है।

लेकिन यह एक खेदजनक पहलू है कि जापानी लोग विशेषकर युवक-युवतियाँ अणुबम तथा युद्ध के दुःखपूर्ण अनुभवों को भुलाते जा रहे हैं। कहने की आवश्यकता नहीं, हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना ने एशिया में क्या किया था।

इस अवसर पर मुझे जापान के सुप्रसिद्ध लेखक मासुजि इबुसे द्वारा लिखा गया "काली वर्षा" शीर्षक वाला उपन्यास पुनः पढ़ने का ख्याल आया।

इस उपन्यास का प्रकाशन कोई 15 वर्ष पहले किया गया था, जिसकी बहुत से पाठकों ने प्रशंसा की है। मुझे याद है कि मैं भी इस उपन्यास से गहण रूप से प्रभावित हुआ था।

इन दिनों दैनिक समाचार पत्र "आसाहि" पर एक समालोचक द्वारा "काली वर्षा" के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा गया था —

"यह पुस्तक पढ़ने के बाद मुझे साहित्य की असीम शक्ति पर विचार करना पड़ा। इस पुस्तक में लेखक न तो गुस्से से अपने विचार बलपूर्वक व्यक्त करते हैं और न ही किसी व्यक्ति या देश की निन्दा करते हैं। श्री इबुसे केवल शान्तिपूर्ण ढंग से अपने वाक्य बढ़ाते हैं। फिर भी उनके इस उपन्यास में पाठकों से युद्ध और अणुबमों के विरुद्ध अपील करने की शक्ति विद्यमान है।"

"काली वर्षा" शीर्षक वाले इस उपन्यास में मुख्यतः हिरोशिमा में एक रेशा कम्पनी में कार्य संलग्न शिगेमात्सु शिजुमा, उसकी पत्नी सिगेको और उनके साथ रहने वाली भानजी यासुको, इन तीनों व्यक्तियों का



Scanned with CamScanner

उल्लेख किया गया है। शिगेमात्सु अणुबम का शिकार है। इस उपन्यास का अधिकतर भाग शिगेमात्सु तथा यासुको की डायरी का रूप ले लेता है।

"काली वर्षा" का प्रारम्भ इस प्रकार होता है—

"इन कई वर्षों से के० नामक गाँव में वास करने वाले शिगेमात्सु के मन पर अपनी भानजी यासुको की चिन्ता के बादल छाये हुए हैं। शिगेमात्सु यह भी सोचते थे कि पिछले कई वर्षों से उनके मन पर बना हुआ यह बोझ भविष्य में भी दूर नहीं किया जा सकेगा। शिगेमात्सु यासुको की शादी को लेकर चिंतित है। के० गाँव में जो हिरोशिमा शहर से काफी दूर स्थित है, एक ऐसी अफ़वाह सुनने में आयी कि द्वितीय विश्व युद्ध के उत्तरार्ध में यासुको सेना विभाग के अधीन हिरोशिमा शहर के एक माध्यमिक स्कूल में भोजन विभाग में कार्य-संलग्न थी। और 6 अगस्त को वहाँ वह अणुबम का शिकार हो गई। शिगेमात्सु के लिए और भी असहनीय बात यह रही कि कई लोगों के कथनानुसार शिगेमात्सु दम्पति यासुको का यह रहस्य छिपाने का भरसक प्रयास कर रहा है। इसी अफ़वाह के कारण यासुको की शादी अब तक साकार नहीं हो पाई। कई लोग यासुको को किसी अच्छे व्यक्ति के साथ शादी करवाने के लिए आगे तो आते हैं, मगर इस अफ़वाह की वजह से तुरन्त ही शादी के बारे में अपने प्रयास बन्द कर देते हैं।"

कहा जाता है कि सन् 1945 के अन्त तक हिरोशिमा में डेढ़ लाख व्यक्ति मृत्यु का शिकार हुए थे। 6 अगस्त को हिरोशिमा में स्थिति नरक के समान थी। जले हुए असंख्य शव, यहाँ वहाँ दिखाई देते थे। उनके चेहरे इतनी बुरी तरह से जल गए थे कि यह तक पहचानना मुश्किल था कि वे नर हैं या नारियाँ। कुछ लोगों के सर पर एक भी बाल न बचा था। सौभाग्यवश अगर वे बच भी गए तो भी परमाणु विस्फोट से फैली भयानक रेडियो धर्मता के कारण उन लोगों को दीर्घकाल तक शारीरिक यातनाएँ झेलनी पड़ी।

उन दिनों कुमारी यासुको हिरोशिमा शहर में माध्यमिक स्कूल में नहीं, बल्कि शहर के परिसर में रेशा कम्पनी के एक कारखाने में काम करती थी। युद्ध समाप्त होने के कोई 5 वर्ष बाद यासुको से शादी के लिए औपचारिक मुलाकात करने का प्रस्ताव रखा गया। लेकिन दोनों के बीच मध्यस्थता की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति ने यह अनुरोध किया कि यासुको यह बताए कि वह अणुबम गिरने के दिन कारखाने से घर तक किस रास्ते से लौटी थी। शिगेमात्सु की तरह यासुको भी डायरी लिखने की आदत थी। इसलिए शिगेमात्सु के मन में इस डायरी की 6 अगस्त के आसपास वाले दिनों का विवरण मध्यस्थ को दिखाने का विचार आया।

6 अगस्त को यासुको हिरोशिमा शहर से कुछ दूर एक कस्बे में थी जिस कस्बे में वह अमरीकी सेनाओं के भारी आक्रमणों से परिवार के महत्त्वपूर्ण सामान की रक्षा करने के लिए वहाँ पहुँची थी।

प्रातः सवा आठ बजे.....वह एक घर पर आराम कर रही थी। उस क्षण पर आकाश में एक पीली सी बिजली दौड़ गई। इसके फ़ौरन बाद विस्फोट का भारी धमाका चारों ओर फैल गया। किसी को पता भी न चला कि अचानक यह क्या घट गया है।

यासुको की डायरी में लिखा हुआ है :—

"जब हमने हिरोशिमा शहर की ओर दृष्टि घुमाई, तो अविश्वस्नीय भयंकर दृश्य दिखाई दिया। एक विशाल छाते जैसे आकार का काला बादल दानव की तरह सारे शहर के ऊपर छाया हुआ था।"



Scanned with CamScanner

यासुको हिरोशिया शहर स्थित अपने घर पर मुश्किल से वापस पहुँच पाई। घर आधा ढह चुका था। उसके मामा का चेहरा अणु बम के कुप्रभाव से ज़ख्मी हो चुका था। लेकिन मामी सकुशल थी। घर पर पहुँचकर यासुको ने देखा कि उसके शरीर तथा पोशाक पर काले-काले गोल-गोल धब्बे पड़े हुए हैं। उसको याद आया कि बीच रास्ते में काले रंग की वर्षा बरसने लगी थी। सुबह कोई दस बजे हिरोशिमा की ओर से कड़कती बिजली के साथ-साथ काले घने बादल उमड़ते आ रहे थे। और थोड़ी ही देर में तेज वर्षा होने लगी। गर्मी का मौसम होते हुए भी सर्दी लगने लगी। बाद में पता चला कि इस काली वर्षा में रेडियोधर्मी राख मिली हुई थी।

शिगेमात्सु की डायरी में भी 6 अगस्त के भयंकर अनुभवों का उल्लेख है। इस डायरी में अणुबम गिराये जाने के बाद शिगेमात्सु, शिगेको और यासुको के ध्वस्त शहर में इधर-उधर शरण लेने वाले दृश्य का वर्णन किया गया है।

इस उपन्यास के उत्तरार्ध में यह पता चलता है कि शिगेमात्सु की आशा के विरुद्ध उसकी भानजी यासुको भी अणुबम की रेडियो-धर्मिता के कारण बीमार थी : यासुको ने अपने मामा व मामी से अपना रोग छिपा रखा था। वह सम्भाव्य पति को तो इसकी सूचना पहले ही दे चुकी थी। वह कभी-कभी तेज़ बुखार और पेचिश से बुरी तरह पीड़ित हो जाती थी और उसके शरीर पर फुंसियाँ निकल आती थीं। उसके सिर के बाल गिरने लगे और वह हमेशा रक्तक्षय रहने लगी।

उपन्यास के अन्त में शिगेमात्सु इस प्रकार बुदबुदाते हैं :—

"अब अगर दूर स्थित उस पहाड़ के ऊपर इन्द्र धनुष निकलेगा, तो चमत्कार घटेगा·····पाँच रंग वाला इन्द्रधनुष अगर निकलेगा, तो यासुको रोग पर विजय पाकर ठीक हो जायेगी ·····"

शिगेमात्सु ने यह जानते हुए भी कि उनकी यह आशा कभी साकार न होने पाएगी, बुदबुदाते हुए उस पहाड़ की ओर अपनी नज़र डाली।

जैसा कि आरम्भ में समालोचक ने लिखा था "काली वर्षा" में गुस्से या घृणा के शब्दों के बिना ही अणुबम के और युद्ध की मूर्खता व विभीषिका के विरुद्ध अपील की जाती है। कभी-कभी तो थोड़ा बहुत व्यंग्यात्मक ढंग से भी लिखा गया है। शायद इसलिए ही मुझे "काली वर्षा" को फिर से पढ़ने की इच्छा हुई है।

इस उपन्यास के रचयिता मासुजि इबुसे का जन्म सन् 1898 में हिरोशिमा प्रान्त में हुआ। उनके पिता एक मध्यवर्गीय जमींदार थे। उन्हें सेना के आदेशानुसार थल सेना के एक सदस्य के रूप में एक वर्ष के लिए सिंगापुर में रहने का भी अनुभव रहा है। यह "काली वर्षा" उपन्यास पहले "भानजी की शादी" के शीर्षक से लिखा जा रहा था, मगर बाद में उसका शीर्षक बदल दिया गया। मासुजि इबुसे ने अपने लेखक जीवन में वाम या दक्षिण पंथी प्रवृति वाले आन्दोलनों से अलग रहे हैं और वे खुद अपना अनोखा संसार स्थापित करने में सफ़ल हुए हैं। उनकी कई कृतियाँ पढ़ने पर मुझे ऐसा लगा कि वे अपनी पुस्तक में साधारण व्यक्ति पर प्रकाश डालते हुए उस व्यक्ति के माध्यम से समाज के प्रति अपनी विचारधाराएँ व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। मासुजि इबुसे आजकल भी लेखक के रूप में सक्रिय हैं।



Scanned with CamScanner

अणु बम से बिलकुल नष्ट हिरोशिमा आजकल पुनः सुन्दर शहर बनकर उभर चुका है। शहर में बहती नदियों पर ऐसी कोई छाया दिखाई नहीं देती जो यह दर्शाती हो कि 37 वर्ष पूर्व इन्हीं नदियों में जले हुए असंख्य शव बह रहे थे।

अणुबम की विभीषिका भूलने न पाए और अणु युद्ध फिर दुबारा न हो, इसलिए आज भी उस विभीषिका की याद दिलाने को हिरोशिमावासी अणुबम से ध्वस्त हुई कुछ इमारतों व नष्ट हुई सामग्रियों को सुरक्षित रखे हुए हैं।

## एशियाई सांस्कृतिक संघ
## (ASIAN CALTURAL FORUM)

गत अप्रैल तोक्यो में एशियाई सांस्कृतिक संघ (Asian Caltural Forum) का गठन किया गया। यह जापानी जनता की ओर से समस्त एशियाई देशों की जनता के साथ मित्रता बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया बिशाल मंडल है। भौगोलिक दृष्टि से जापान एशिया में स्थित है पर अधिकांश जापानी एशिया की ओर न देखकर पाश्चात्य देशों व अमेरिकी की ओर देखते हैं। हम एशियाई देशों के बारे में, पड़ोसी देशों के बारे में जानते हैं? हमें एशिया के बारे में जानना चाहिए, हमें पड़ोसी देशो के बारे में जानना चाहिए। यह भी इस मंडल का प्रमुख उद्देश्य है। हमारा मंडल एशियाई देशों के संस्कृति, समाज, राजनैतिक परिस्थिति आदि को जानने के लिए समय समय पर संगोष्ठी का आयोजन भी करता है।

एशियाई सांस्कृतिक संघ समस्त एशियाई देशों की जनता के साथ सम्पर्क स्थापित करना चाहता है। सदस्य के लिए आप का स्वागत है।

**एशियाई सांस्कृतिक संघ**
**(Asian Caltural Forum)**
अध्यक्ष : शिगेओ आराकि
कार्यालय :
**249, Momura, Inagi-shi, TOKYO, JAPAN**



Scanned with CamScanner

# आधुनिक जापानी साहित्य की प्रवृत्तियाँ (2)

शिगेमो आराकि

सन् 1887 के आसपास से शुरू हुआ हमारे देश का आधुनिक साहित्य वास्तव में पाश्चात्य देशों से आयातित आधुनिक साहित्य से प्रभावित था, परन्तु सन् 1920 तक आते आते जापानी आधुनिक साहित्य अपना विशिष्ट रूप धारण करने लगा और धीरे-धीरे जापानी आधुनिक साहित्य का विकास भी होने लगा। अनेक साहित्यिक विचारधाराएँ उत्पन्न हुई, साहित्यिक मंडल बनाए गए। इन विचारधाराओं और साहित्यिक मंडलों से जापानी मनोवैज्ञानिक उपन्यास, भावात्मक उपन्यास, मानवतावादी, कला के लिए कलावादी उपन्यास और आत्मकथा के रूप में लिखी कहानी का सृजन हुआ। पर विश्व स्तर की साहित्यिक दृष्टि से जापानी साहित्य को देखा जाए तो आधुनिक जापानी साहित्य का स्थान इतना ऊँचा नहीं था। जापान के बाहर दुनिया तेज गति से बदलने लगी थी। प्रथम महायुद्ध, रूस में समाजवादी शासन की स्थापना, महायुद्ध के बाद के विश्व स्तर के आर्थिक संकट आदि से दुनिया भर की परिस्थिति बदलने लगी और दुनिया नये युग में प्रवेश हो रही थी। समाज का विकास और व्यक्तिगत सुख एक साथ प्राप्त हो, ऐसी आशा अब खत्म होने लगी। परम्परागत विचारधाराओं के साथ साथ आत्मबोध का भी ध्वंस होने लगा। इन पतन और तेज परिवर्तन ने कला और साहित्य के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला।

प्रथम महायुद्ध के बाद हमारे जापान में भविष्यवाद, अभिव्यक्तिवाद और यथार्थवाद आदि का आन्दोलन कलाकारों व कवियों में उत्पन्न हुआ साथ ही क्रांतिकारी साहित्य आन्दोलन और मजदूर साहित्य आन्दोलन भी शुरू हो गए।

1918 में जापान में कई समस्याएँ पैदा हुई, चावल न मिलने के कारण जापान में कई स्थानों पर दंगे हुए और मजदूरों की स्थिति में परिवर्तन व समाजवादी विचारधारा के प्रभाव से कई कारखानों में हड़ताल हो गई। आर्थिक संकट से भी जापानी समाज घिर गया था। साहित्य पर इन सब का प्रभाव सीधा प्रकट हुआ अर्थात् जहाँ पहले साहित्य में यथार्थवाद और आत्मकथात्मक उपन्यास और भावात्मक उपन्यासों की प्रधानता थी वहाँ अब ऐसे साहित्य के प्रति विरोध और उसे ध्वंस करने का आन्दोलन शुरू हो गया था। यह आन्दोलन साहित्य में नव यथार्थवादी विचारधारा प्रमुख हो गई। और साहित्यिक आन्दोलन के रूप में क्रान्तिकारी साहित्य को लक्ष्य बना कर यह मजदूर साहित्य व मार्क्सवादी साहित्य का आन्दोलन बन गया। यह आन्दोलन हालांकि



Scanned with CamScanner

विदेशों से आयातित आन्दोलन था पर इस युग के साहित्यकार पश्चिमी देशों के साहित्यिक विचार अथवा साहित्यिक आन्दोलन में गहरी रुचि रखने के साथ-साथ साहित्यिक आन्दोलन व मार्क्सवादी साहित्य आन्दोलन पश्चिमी देशों के प्रभाव से शुरू होते हुए भी जापान की इस युग की आवश्यकतानुसार शुरू किया गया आन्दोलन था।

जापान में इस युग में दो साहित्यिक विचारधाराएँ सामने आयीं। एक तो इस अव्यवस्थित युग में जीने के लिए पुराने साहित्यिक विचारों को नष्ट कर अभिव्यक्ति की नई पद्धति से इस युग को समझने की कोशिश। इस विचार के साहित्यकार को आधुनिक कलावाद नाम से जाना जाता है। दूसरे मजदूरों की चेतना में साहित्यकारों की चेतना को मिला कर साहित्यिक आन्दोलन चलाने का ग्रूप, यानि मजदूर साहित्य आन्दोलन। दोनों साहित्यिक दलों ने प्रतिष्ठित मूल्यों और समाज की तीव्र निंदा और उसका विरोध किया। पर विधि या विचार, अभिव्यक्ति अथवा अमल, कला अथवा राजनीति के स्तर पर दोनों दलों के बीच में भारी अन्तर था।

पहले आधुनिक कलावादी साहित्य का परिचय कराना चाहूँगा। इस दल के साहित्यकारों में सब से पहले रिइचि योकोमित्सु का नाम आता है। उन्होंने "हाए" ("मक्खी" 1923), "निचिरिन" ("सूर्य" 1924) आदि में भविष्यवादी एवं भावात्मक साहित्य से एक भिन्न साहित्य का सृजन किया। उनके "हाए" ("मक्खी") में तांगे के घोड़े के पीठ पर बैठी मक्खी के माध्यम से गाँव का प्रकृति वर्णन और गाँव के लोगों के अडियल चरित्र और उन के रहन-सहन को चित्रित किया गया है। इस कहानी के अन्त में दुर्घटनाग्रस्त तांगा और इस तांगे से आराम से उड़ गई मक्खी का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस अन्तिम चित्रण में लेखक का मनोभाव स्पष्ट दिखाई देता है। योकोमित्सु ने नैतिकता की दृष्टि से मानवता की सच्चाई को अभिव्यक्ति करने के साहित्य को नकार कर दिया और झूठे मानवतावाद को छोड़कर जीने के लिए अनैतिक अहम को इस उपन्यास में प्रस्तुत किया। उनके "किकाइ" ("मशीन" 1930) में भी व्यक्तिगत नैतिकताहीन समाज के क्लेश को चित्रित किया। योकोमित्सु जैसे लेखकों के ग्रूप को नवीन चेतना मंडल कहा गया है।

यासुनारि कावाबाता भी इस मण्डल के साहित्यकार थे। बचपन में ही उनके माँ-बाप और सभी रिश्तेदारों का देहान्त हो गया था। इस कारण वे बचपन से ही अकेलापन महसूस करने लगे थे। इन दुःखमय अनुभवों से उन के मन में अस्तित्वहीनता का बोध और निर्ममता पैदा हो गई और जापानी परम्परागत दर्शन 'मोनो नो आवारे' (प्रकृति और जीवन में शान्तिपूर्ण व दुःखमय सौन्दर्य खोजने की मनोवृत्ति) की भावना भी उन्होंने सीखी। "इजु नो ओदोरिको" ("इजु की नर्तकी" 1926) उन की प्रमुख रचनाओं में से एक है। यह युवा छात्र और एक नर्तकी की प्रेम कथा है। इस कहानी में ताजी भावव्यंजकता व रति भावना और 'मोनो नो आवारे' का समन्वय देखने को मिलता है। इस प्रकार की काव्यात्मक कहानियों के अतिरिक्त Frued और Joyce से प्रभावित होकर गहरी मनःस्थिति की अभिव्यक्ति और विलक्षण भावनाओं की अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती हैं। इस प्रकार की कहानियों में "किनजू" ("पशु-पक्षी" 1933) है। और उन्होंने "युकिगुनि ("हिम प्रदेश" 1935) में नैतिकताहीन आदमी की रति भावना, शून्यभावना और अद्भूत जापानी सौन्दर्य को हिम से आच्छादित प्रदेश के चित्रण के साथ अभिव्यक्ति किया। द्वितीय महायुद्ध के बाद "सेंबाजुरु" ("एकहजार के कागज सारस" 1951), "यामा नो ओतो" ("पहाड़ की आवाज" 1954) आदि में उन्होंने जापान के परम्परागत सौन्दर्य को गहरे दार्शनिक दृष्टि से चित्रित किया। इसके बाद "कोतो" ("प्राचीन शहर" 1962)



Scanned with CamScanner

"नेमुरेरु बिजो" ("सोती हुई सुन्दरी" 1961) आदि में उन्होंने मृत्यु और सेक्स के वर्णन द्वारा जीवन में छिपा हुआ यथार्थ और अद्भुत सौन्दर्य को अति यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त किया। पाश्चात्य देशों के तर्क संगत साहित्य के विपरीत पूर्वी देशों के अतर्क संगत सौन्दर्य साहित्य की उपलब्धि के कारण उन्हें सन् 1968 में नाबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया परन्तु सन् 1972 में उन्होंने आत्महत्या कर ली। समझा जाता है कि उन की आत्महत्या भी उन के साहित्य की एक अभिव्यक्ति है।

इस मण्डल के अन्य साहित्यकारों में से मोतोजिरो काजिइ और इसोता कामुरा प्रमुख हैं। काजिइ की शैली कोमल है। उन्होंने मृत्यु के डर से उत्पन्न मनोभाव को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। अपराधी भाव, आत्मघृणा से पीड़ित ईसोता कामुरा ने आत्म प्रताड़णा के साहित्य का सृजन किया।

क्रमशः

# जापान में हिन्दी पुस्तकों की कमी

श्री मिज़ोकामि के कथनानुसार जापान में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन के दो केन्द्र है। तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय तथा ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय। दोनों विश्वविद्यालयों में हिन्दी पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। परन्तु साधारण हिन्दी प्रेमियों के लिए हिन्दी पुस्तकें कहाँ मिलेंगी? भारत सरकार हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीयता पर बल देना चाहती है पर हिन्दी प्रचार के लिए भारत सरकार क्या कदम उठाती है? हमें मालूम है कि दिल्ली में विदेशी दूतावास द्वारा बनाए गए पुस्तकालय, सूचना केन्द्र आदि हैं परन्तु भारत सरकार विदेशों में इस प्रकार का सांस्कृतिक कार्य करती है? न तो जापान में सूचना केन्द्र है, न तो भारतीय पुस्तकालय है। हाँ, दूतावास में छोटा-सा पुस्तकालय है पर वहाँ कितनी हिन्दी की किताबें हैं? जापान में एशिया में सब से बड़ा पब्लिक पुस्तकालय है उस का नाम राष्ट्रीय संसद पुस्तकालय है। उस में एशिया-अफ्रीका विभाग है पर खेद की बात है कि इस विभाग में सिर्फ दो सौ हिन्दी की पुस्तकें हैं। अब राष्ट्रीय संसद पुस्तकालय भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें खरीदने की योजना बना रहा है। हम हिन्दी प्रेमी इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मेरा एक प्रस्ताव है। भारत में इतने जोर-शोर से हिन्दी का प्रचार हो रहा है और इस वर्ष दिल्ली में विश्व हिन्दी सम्मेलन होने वाला है अगर हर एक देश में भारत सरकार द्वारा बनाए गए हिन्दी पुस्तकालय अथवा भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों का संग्रहालय है और जिस में मार्ग दर्शक के रूप में हिन्दी विशेषज्ञ नियुक्त किया जाए तो हिन्दी के प्रचार के लिए कितना अच्छा होगा और जहाँ हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं की पढ़ाई भी हो। कुछ कार्य किये बिना हिन्दी का प्रचार नहीं हो सकेगा।



Scanned with CamScanner

# ब्लड ग्रूप और स्वभाव का सम्बन्ध

तेरुमित्सु माएकावा

## 1. इस क्षेत्र के अध्ययन का इतिहास

मानव के ब्लड ग्रूप और शरीर गुण व स्वभाव के बीच का सम्बन्ध लगभग सन् 1920 से ज्ञात होने लगा। पहले जर्मनी और जापान में इस क्षेत्र में अध्ययन किया गया। उस वक्त ब्लड ग्रूप और अपराधियों का सम्बन्ध अनुशीलन का मुख्य विषय था। जापान में तो शैक्षिक मनोवैज्ञानिक श्री ताकेजि फुरुकावा के सन् 1932 में ब्लड ग्रूप और स्वभाव के सम्बन्ध के अपने अध्ययन के परिणामों के प्रकाशन ने देश में एक तरफ की सनसनी फैला दी। उनके निबन्धों में आँकड़े का अभाव था इसलिए कुछ लोगों ने ब्लड ग्रूप व स्वभाव वाली बात को एक तरह की ज्योतिष तक कहा। परिणामस्वरूप जापानी जनता ने फुरुकावा जी की मान्यताओं का विरोध किया। लेकिन विरोध करने वालों के पास भी विरोध के लिए काफी वैज्ञानिक आँकड़े नहीं थे। असल में हमने अभी तक ब्लड ग्रूप और स्वभाव के सम्बन्ध के खण्डन करने लायक जाँच या आँकड़े नहीं देखे।

इसके बाद यूरोप और अमेरिका में ब्लड ग्रूप और शरीर गुण या रोगों के सम्बन्ध के बारे में अध्ययन तेज होने लगा और कुछ अच्छे शोध-प्रबन्ध भी सामने आए। जापान में उस समय इस क्षेत्र का अध्ययन बहुत पीछे था। अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालयों में ब्लड ग्रूप और स्वभाव के सम्बन्ध के बारे में भी काफी अनुशीलन किया जा रहा है। जापान में फुरुकावा जी के बाद यह विषय करीब-करीब भुला दिया गया। पर सन् 1971 में श्री मासाहिको नोमि ने इस विषय में एक पुस्तक प्रकाशित की। यह पुस्तक लिखने के लिए नोमि जी ने सही अर्थ में अनुकूलित भारी जन-संख्यावाली सांख्यिकीय अन्वेषण किया। चरित्र के अध्ययन के क्षेत्र में इतना बड़ा अन्वेषण अभूतपूर्व था। नोमि जी की इस पुस्तक के आने के बाद जापानी जनता में इस विषय में रुचि एकदम बढ़ने लगी। अब लगता है कि इस देश के बहुत युवक व युवतियाँ इस विषय के अध्ययन में रुचि ले रहे हैं।

## 2. ब्लड ग्रूप और स्वभाव के मध्य सम्बन्ध का आधार

ब्लड ग्रूप शरीर गुण के अन्तर या शरीर के उपादानों के रासायनिक अन्तर को सूचित करने वाला एक तत्त्व है। (ऐसे तत्त्व शरीर में अधिक नहीं है।) इसलिए शरीर गुण व स्वभाव से ब्लड ग्रूप का सम्बन्ध



Scanned with CamScanner

होना सिद्धान्ततः आवश्यक है । लेकिन साधारण जीवन में यह सम्बन्ध आदीमय। क ... ... की अभि व्यक्तियों या व्यवहारों में कहाँ तक देखा जाता है यह एक विचारणीय प्रश्न है।

नोमि जी ने इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बहुत से प्रयत्न किए है । उन्होंने मुख्यतः दो पद्धति का प्रयोग किया ।

1. उन्होंने अपनी प्रश्नावली को बहुत से लोगों में बाँटकर जिसमें हर आदमी को हस्ताक्षर सहित स्वयं अपने व्यवहारों की विशेषता लिखनी थी, एकत्रित कर उनका अध्ययन किया ।

2. उन्होंने विशेष व्यवसायों, कलाओं और खेलकूद के क्षेत्र में ब्लड ग्रूप की चार श्रेणियों की औसत अनुपात से तुलना की । पहली पद्धति में जून सन् 1975 तक 12000 व्यक्तियों के आँकड़े इकट्ठे हुए थे और दूसरी पद्धति में 30 विशेष क्षेत्रों के बारे में अध्ययन किया गया था । सांख्यिकीय रूप से परीक्षा करने पर यह आँकड़ों को कुछ कहते दिखाई पड़ते हैं । इसके अतिरिक्त बहुत से अन्य लोगों के अध्ययन से भी यह निःसदेह सिद्ध होता है कि मनुष्य के साधारण जीवन में ब्लड ग्रूप उसके मनोभावों आदि की अभिव्यक्तियों एवं व्यवहारों से काफी सम्बन्ध रखता है।

पर मानव चरित्र की वैज्ञानिक जाँच अभी भी अच्छी तरह विकसित नहीं हो सकी है । निहित स्वभाव और कार्य-कारण-न्याय के अनुसार निर्मित चरित्र के पहलुओं का सम्बन्ध स्थापित करने का बड़ा प्रश्न अभी बाकी है । चरित्र के संरचना के ब्योरे को साकार रूप से अध्ययन करने के लिए और बहुत आँकड़ों एवं अध्ययन की जरूरत है । इसके अतिरिक्त अभी तक रक्त की लगभग चार सौ वर्गीकरण की पद्धतियों का पता लगा है। लेकिन उनमें ए० बी० ओ० पद्धति ही सब से प्रमुख है । वास्तव में ए० बी० ओ० पद्धति वाले चार ग्रूप और स्वभाव की अभिव्यक्तियों के बीच काफी सम्बन्ध दिखाई देता है । अन्य पद्धतियों वाले ब्लड ग्रूपों के स्वभाव के ऊपर प्रभावों के बारे में भी हमें आगे चलकर जाँच करनी है।

## 3. चार ब्लड ग्रूप के स्वभावों की प्रमुख अभिव्यक्तियों के उदाहरण

बहिर्मुख-अन्तरमुख जैसे मुख्यतः कार्य-कारण-न्याय के अनुसार निर्मित प्रवृत्ति सब लोगों में ब्लड ग्रूप के अनुरूप सूक्ष्म भेद रखती दिखाई देती है और हर ब्लड ग्रूप के स्वरूप में भी एक प्रकार की श्रेणी का अन्तर होता है, लेकिन नीचे लिखित अभिव्यक्तियों की सम्भावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है । ये चार ब्लड ग्रूप वालों के समापवर्तकों के उदाहरण हैं ।

### (क) ओ वाले ब्लड ग्रूप के व्यक्ति

ओ वाले ब्लंड ग्रूप के व्यक्ति जीने की तृष्णा को सबसे अधिक और सबसे स्वभाविक ढंग से लेते हैं। इन व्यक्तियों में विशेष उद्देश्यों को पूरा करने की प्रवृत्ति बहुत स्पष्ट नज़र आती है । उनके विचार और व्यवहार सीधे-सीधे होते हैं । वे (व्यवहार में या वास्तव में नहीं) तर्कसंगत होना पसन्द करते हैं और अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हैं । वे भीतर से सशक्त यथार्थवादी और बाहर से रोमनी या आदर्शवादी प्रवृत्तियाँ रखते हैं । वे व्यवहार में परिचितों से मिलन-सार होते हैं और उसका ओ वाले ब्लड ग्रूप की स्त्रियों से प्रेम होता है । इसके विपरीत किसी भी अज्ञात आदमियों से मिलने में ओ ग्रूप वाले सतर्कता लेते हैं । उन्हें अपना विशिष्ट होना और असाधारण होना पसन्द है वे अपने आपको अच्छा दिखाने का आग्रह करते हैं। वे



Scanned with CamScanner

समाज में अपना स्थान या अपने से दूसरों के स्तरों के वर्ग-भेद के प्रति सचेत होते हैं। उसमें प्रतिक्रिता की भावना होती है। सामान्यत: उनकी रुचि अपने विशेष विषय में ही होती है।

## (ख) ए वाले ब्लड ग्रूप के व्यक्ति

ए वाले ब्लड ग्रूप के व्यक्ति कोई एक निश्चित जीवन लक्ष्य को चाहने वाले होते हैं। वे पास वालों के साथ सदैव शान्तिमय सम्बन्ध बनाए रखना चाहता है और इसलिए नित्य सचेष्ट रहते हैं। वे इस हर एक बातों का मतलब समझना चाहते हैं या मतलब लगाता है। वे अन्तर से सबसे जिद्दी हैं पर वे नियम एवं व्यवस्था का अधिक समादर करते हैं। उसमें नम्रता का तो कुछ अभाव-सा मालूम होता है। वे हमेशा अपने काम को पूरा कर लेना चाहते हैं परन्तु जीवन या यातना से नहीं।

ए ग्रूप में भविष्य के विषय में या तो सन्देह या निराशावाद रखने वाले अधिक हैं। अपने मनोभावों की अभिव्यक्तियों को प्रकट होना उन्हें पसन्द नहीं। इस ग्रूप में बाहरी रूप-रंग के विरुद्ध अन्तर में यथास्थिति को तोड़ने का स्वप्न देखने वाले अधिक हैं। ए वाले अगर हृदय में कोई चोट खाते हैं तो उसे ठीक होने तक लम्बा समय लगता है। सामान्यत: उसकी असली योग्यता जाँच करने के लिए और लोगों से अधिक समय की जरूरत है। लेकिन उनकी योग्यता बहुत ठोस होती है।

## (ग) बी वाले ब्लड ग्रूप के व्यक्ति

उस ग्रूप के लोग अपनी रुचि के अनुसार जीने वाले अधिक हैं। अपनी इच्छानुसार जीना, जब मन हो तब काम करना। इस तरह की बात उन्हें पसन्द होती है और उन्हें अपने ऊपर कोई भी नियंत्रण पसन्द नहीं। वे परिवर्तनों का मुकाबला करने में निपुण होते हैं। प्राय: वे एक-एक करके बहुत योजनाएँ या बोध उत्पन्न करते हैं। भविष्य के बारे में आशावादी होने के कारण वे सक्रिय रहते हैं लेकिन सतर्कता का तो उनमें कुछ अभाव होता है। उनकी विचार पद्धति व्यवहारिक होती है। ऊपरी रूप-रंग के विपरीत वे भेदभाव न रखकर सब लोगों से आत्मीय हो जाते हैं। यद्यपि वे अचानक भावुक भी हो जाते हैं और शीघ्र ही सामान्य स्थिति में भी आ जाते हैं। सामान्यत: बी ग्रूप वाले व्यक्ति निर्बाध कामों में ही अपनी योग्यता अच्छी तरह प्रकट करते हैं।

## (घ) एबी वाले ब्लड ग्रूप के व्यक्ति

एबी ब्लड ग्रूप के व्यक्ति नित्य औरों से कुछ 'अन्तर' रखना चाहते हैं। वे अपने स्थान को आरक्षित कर समाज के क्रिया कलापों में जोर-शोर से भाग लेना चाहते हैं, लेकिन इस ग्रूप के कुछ लोग तो औरों से कतई सम्पर्क स्थापित करना पसन्द नहीं करते। वे अकेले रहना चाहते हैं। उन के विचार पद्धति युक्ति संगत होती है और वे आलोचना एवं विश्लेषण में निपुण होते हैं। अगर औरों के अनुरोध होने पर एबी वाले के लिए बात करने के लिए 'नहीं' कहना आसान नहीं। ऐसी स्थिति में वे इन अनुरोधकर्त्ताओं के अनुरोध को स्वीकार कर देते हैं। वे जीवन की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। ओ ब्लड वालों के विपरीत कृत्रिम वातावरण भी उनके लिए अनुकूलनीय होता है। समाज में वे शांत दिखाई देते हैं, पर अपने परिवार आदि में वे कुछ मौजी हैं और उन का मनोभाव तुरन्त क्षुब्ध हो जाने वाले होते हैं। वे सब प्रकार के ढंगों से द्वेष रखते हैं। लेकिन समाज में अपने अन्दर की ऐसी प्रवृत्ति को छिपाकर मेलमिलाप भी दिखाते हैं। इस ग्रूप में स्वप्न का सत्कार करने में निपुण, प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अधिक है।



Scanned with CamScanner

## 4. ABOLOGY—ब्लड ग्रूप और स्वभाव के संबंध पर—

आधारित मानवशास्त्र का भविष्य और उसका उपयोग आदमियों के चरित्रों की जाँच अभी ऊपरी अवलोकन या सतही निदान से आगे नहीं बड़ी। Abologists तो ब्लड ग्रूप जैसे वर्गीकरण निष्पक्ष मापदंड पर आधारित होकर सांख्यिकीय आधार पर मनुष्यों के व्यवहारों का तुलनात्मक अवलो करते हैं। ज्यों ज्यों यह विज्ञान विकसित हो गया त्यों त्यों मानव के बारे में ज्ञान पहले से अधिक गहरा अं अधिक उपयोगी हो गए। हम ऐसी आशा करते हैं। वास्तव में अपने आप को निष्पक्ष दृष्टि से फिर देखने लिए औरों से संबंधों को सामान्य करने के लिए अपनी उपयुक्तता जानने और आशाजनक पेशों की खोज के लि Abology की क्षमता के बारे में अभी तक रिपोर्टें हमारे सामने आ गई हैं, लेकिन इन आँकड़ों का असावधा से अध्ययन करना या इन आँकड़ों से एक तरफ निष्कर्ष निकालना हमें निषिद्ध है। Abology अ अधूरा है।

उक्त निबंध Encyclopodia Grand Universe के लिए लिखित श्री मासाहिको नोमि के लेख आधार पर मैंने लिखा। भारत जापान से अलग इतिहास, संस्कृति और सामाजिक बनावट रखता है और च ब्लड ग्रूप समुदायों का अनुपात भी भारत और जापान में बिल्कुल भिन्न होगा। (जापान में ओ : ए : ए बी बी = 30.7 : 38.1 : 21.8 : 9.4 है उत्तरी भारत में ओ : ए : बी : ए बी = 33 : 21 : 38 : 8 है दक्षिण भारत में ओ ग्रूप वाले सबसे अधिक हैं)

इन बातों से स्पष्ट है कि जापान की जाँच को भारत पर सीधा लागू करना ठीक न होगा लेकिन भविष्य में भारत में भी ABOLOGY पनपेगा, तो मानव के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत उप योगी होगा। मैं ABOLOGY के भविष्य व अध्ययन में आशा रखता हूँ।



Scanned with CamScanner

# समीक्षा–समीक्षा

**[हमें समीक्षार्थ कई पुस्तकें व पत्रिकाएँ प्रेषित की जाती हैं। पत्रिकाओं के आदान-प्रदान से आपस में साहित्यिक सद्भावना उत्पन्न होती है। सभी प्रेषकों को धन्यवाद देते हुए यहां कुछ पुस्तकों और पत्रिकाओं की समीक्षा दी जा रही है।]**

—सम्पादक

**"बसन्त और यायावर"** (लेखक : केन्जी मियाज़ावा अनुवादक : कीयो कुरु एवं जितेन्द्र राठौर, प्रकाशक : संभावना प्रकाशन, हापुड़, 1982) यह जापानी कवि केन्जी मियाजावा के कविता संकलन का हिन्दी अनुवाद है। अनुवादक पटना से प्रकाशित पत्रिका "प्रत्यक्ष" के सम्पादक श्री जितेन्द्र राठौर और जापानी हिन्दी प्रेमी श्रीमती कीयो कुरु हैं। एक जापानी कवि की कविताओं का हिन्दी में अनुवाद सम्भवतः पहली बार हुआ है, निःसंदेह यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है।

मगर जापानी कविता के मूल अर्थ को न बदल कर हिन्दी में पद्यात्मक अनुवाद करना कितना कठिन है यह अनूदित कविताएँ बताती हैं। साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में शाब्दिक बदलाव एवं अर्थ का बदलाव बहुत महत्त्वपूर्ण विषय बन जाते हैं। क्योंकि कविता सिर्फ मूल शब्द से ही नहीं, बल्कि अर्थ से भी गहरा सम्बन्ध रखती है। दोनों सम्बन्धों को तोड़े बिना दूसरी भाषा में अनुवाद कर पाना शायद सबसे उत्तम अनुवाद का नमूना होगा। परन्तु यह अत्याधिक कठिन काम है। कहीं अनुवाद में उपयुक्त शब्द के चुनाव में मूल अर्थ से दूर भटक जाने का अन्देशा भी हो सकता है। केन्जी मियाजावा की यह अनूदित कविताएं भी कई स्थलों पर इसका अपवाद नहीं है। उदाहरण देने से पहले इस पुस्तक के शीर्षक के सम्बन्ध में इस समीक्षक के मन में जो सवाल उठा, उसके विषय में कहा जाए। शीर्षक "बसन्त और यायावर" केन्जी मियाज़ावा की कविता शीर्षक "हारु तो शुरा" का अनुवाद प्रतीत होता है। इस जापानी शीर्षक का हिन्दी में सीधा अनुवाद किया जाए तो वह "बसन्त और असुर" होगा। 'हारु' का अर्थ है 'बसन्त' और 'शुरा' शब्द मूल संस्कृत शब्द 'असुर' का विकृत रूप है। संस्कृत शब्द 'असुर' बौद्ध धर्म के साथ जापान में पहुँच कर 'शुरा' हो गया। कवि केन्जी मियाजावा बौद्ध धर्म के अनुयायी भी थे और अपने को इस हिंसामय दुनिया में पैदा हुए तत्व मानते थे। उनके लिए अपना अस्तित्व जैसे असुर द्योतक था। इस हिंसामय दुनिया के प्रति क्रोध, क्षोभ, निराश और साथ ही भविष्य के प्रति आशावादिता की भावना लेकर वे जिए। वे प्रकृति प्रेमी भी थे। उनकी कविता में प्रकृति वर्णन भी खूब मिलता है। उनकी कविता में प्राकृतिक वर्णन और आन्तरिक मनोभावात्मक वर्णन का अच्छा समन्वय होता है। इसलिए उनका जापानी शीर्षक में 'हारु' यानी 'बसंत' उनके प्रकृति बोध अर्थात् बाह्य वातावरण का प्रतीक है और



Scanned with CamScanner

दूसरी ओर 'शुरा' यानी 'असुर' उनके आन्तरिक मनोभाव का प्रतीक है। हम इन दोनों भावों का समन्वय उनकी कविता में देख सकते हैं और शायद यही कवि के शीर्षक का आशय भी था। पर हिन्दी में अनूदित 'यायावर' शब्द का किस कारण से प्रयोग किया गया है स्पष्ट समझ में नहीं आता। 'असुर' की तुलना में 'यायावर' शब्द हलका मालूम होता है और इस कारण कवि के मनोभाव का प्रतीक बनने के लिए शायद यह शब्द पूरी तरह सफल सा प्रतीत नहीं होता।

अब कविता के बारे में विचार करें—

पठार

मुझे लगा
वह समुद्र है
लेकिन वह तो पहाड़ है, न !
अरे
हवा में उड़ रहे हैं बाल
जैसे—
नाच रहे हैं हिरन·····

उपरोक्त लिखित कविता श्री राठौर द्वारा किया गया अनुवाद है। केन्जी मियाजावा की इस कविता का शाब्दिक अनुवाद इस प्रकार है :—

पठार

वह समुद्र है क्या ?
मुझे लगा था
पर नहीं, वह तो चमकता पहाड़ है।
बाल हवा में उड़ रहे हैं
जैसे—हिरन नृत्य है।

राठौर जी के अनुवाद में 'चमकता' शब्द लुप्त हो जाता है और हिरन नाच रहे हैं। इस कविता में 'चमकता' शब्द का अर्थ गहरा है। कवि ने क्यों पहाड़ को समुद्र समझा है ? कवि पठार पर खड़े होकर आस पास के पहाड़ों को देख रहे थे सूरज की किरणों से पहाड़ चमक रहे थे जैसे समुद्र की चमकती लहरें। इसलिए उन्हें लगा 'वह समुद्र है क्या ?' और बाल हवा में उड़ते देख उन्हें हानामाकि जिले के लोक नृत्य का स्मरण हो आया, न कि जानवर हिरन नाच रहे हैं। इन कविताओं के अनुवाद में ऐसा कुछेक स्थलों में इस प्रकार की गलतियाँ देखने को मिलती है। किन्हीं स्थलों पर मूल कविता की पंक्ति का लोप भी। उदाहरण के लिए 'चीड़ की सुइयाँ' में 'फिलहाल लाल हैं तुम्हारे गाल' के बाद एक पंक्ति लुप्त हो गई मालूम पड़ता है। कई अनुवाद बहुत अच्छे अनुवाद बन पड़े हैं जैसे 'अलविदा का भोर' आदि। श्रीमती कीयो कुरु 'अपनी बात' में स्पष्ट लिखती है कि 'यह अब सन्तोषजनक नहीं है। यह केन्जी-साहित्य के ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने का आरम्भिक कदम है।' यह उनकी सही आवाज होगी। हम उन अनुवादकों के प्रयास की प्रशंसा करते हुए केन्जी-साहित्य के और अनुवाद की प्रतीक्षा करेंगे।



Scanned with CamScanner

एक और अनूदित कविता संकलन की पत्रिका हमारे पास आई है। यह मध्यप्रदेश, पिपरिया से प्रकाशित साहित्य की पत्रिका "तनाव" (अंक 11, नवम्बर, 1981, सम्पादक : वंशी माहेश्वरी) है। इस अंक में अर्जेन्तीना के कवि एमोलियो शोलेशी एवं रोबेर्तो स्वारेसि की कविताओं का अनुवाद है। यह भी मूल स्पानी से हिन्दी में किया गया अनुवाद है इन दो कवियों की कविताओं का अनुवाद मूल स्पानी कविताओं से भिन्न है या नहीं यह नहीं कहा जा सकता है पर हिन्दी में अनूदित कविताओं की काव्यात्मकता शायद मूल स्पानी कविताओं से भिन्न नहीं होगी।

विभिन्न देशों के साहित्य का अनुवाद हमें बम्बई से प्रकाशित पत्रिका "वर्षवैभव" (अंक 4, 1980, सम्पादक : देवेन्द्र जैन) के विश्व लघु कथा विशेषांक में भी देखने को मिला। इसमें चीनी, अमेरिकी, पोलिश, स्पेनिश, इण्डोनेशियाई, रूसी और जर्मन कथाएँ शामिल हैं। साथ ही हिन्दी, मराठी और गुजराती लघु कथाएँ और लघु कथा के संदर्भ में लेख भी हैं। हम जैसे विदेशियों के लिए लघु कथा की परिभाषा समझ पाना कुछ कठिन है। सम्बन्धित लेखों को पढ़ने से मालूम होता है कि लघु कथा की परिभाषा कितनी व्यापक है। क्या इसमें विदेशों की लघु कथाओं के रूप में दी गई कथाएँ निबन्धों में दी गई परिभाषा के आधार पर चुनी गई हैं? उस लघु कथा विशेषांक ने लघु कथा और लघु कहानी आदि के अन्तर को विचारने के लिए हमें बाध्य कर दिया है।

हाल ही में और एक पत्रिका हमारे पास आई है। मेरठ से निकलने वाली मासिक पत्रिका "कुन्दन-शील" (अंक 7, जुलाई, 1982, सम्पादक : सुरेश चन्द जैन)। इसमें नयी काव्य-विधा 'तेवरी' का परिचय है। जन उद्‌बोधन के स्वर के रूप व सही जिन्दगी के दस्तावेज की कविता 'तेवरी' के जन्म का हम स्वागत करेंगे।

शिक्षा से सम्बन्धित पत्रिका "साहित्य परिचय" (सम्पादक विनोद कुमार अग्रवाल, आगरा) का इस वर्ष का विशेषांक 'नैतिक शिक्षा' है। यह विशेषांक बहुत सामयिक है। क्योंकि आज के युवकों का नैतिकता विमुख व्यवहार सामाजिक समस्या (?) बन गया है। इस समस्या से केवल भारत के शिक्षक ही नहीं, बल्कि विश्व के शिक्षक भी चिन्तित हैं। इस विशेषांक में सभी लेखकों ने नैतिक शिक्षा के संदर्भ में गहराई से विचार किया है। प्रस्तुत लेखों को पढ़ने से नैतिक शिक्षा की आवश्यकता और उसकी समस्या को महसूस किया जा सकता है और साथ ही इस अंक में नैतिक शिक्षा देने के विषय में कुछ सुझाव भी दिये गए हैं। जितने कि शिक्षक नैतिकता के विषय में चिन्तित हैं क्या उतने माँ-बाप भी घर पर अपने बच्चों की नैतिक शिक्षा के बारे में चिन्तित हैं? आज के माँ-बाप अपने अनैतिक व्यवहारों को भूल कर यह आशा रखते हैं कि बच्चों को नैतिक शिक्षा देने की जिम्मेदारी केवल शिक्षकों की ही है। छात्र नैतिक शिक्षा केवल पाठशाला में ही नहीं, बल्कि समाज में हर जगह, हर क्षण पर प्राप्त कर सकता है। इस विशेषांक पढ़ने से भारत के शिक्षकों में व्याप्त चिन्ता महसूस होती है, वही चिन्ता विश्व के सभी देशों के शिक्षकों को भी है।

इसके अतिरिक्त इन्दौर से प्रकाशित "ऋतुचक्र", लखनऊ से प्रकाशित "प्रियंका" आदि हमें नियमित रूप से प्राप्त हैं इसके लिए धन्यवाद।



Scanned with CamScanner

# परिशिष्ट

## गत वर्ष जापान में प्रकाशित भारतीय साहित्य एवं भारतीय भाषा सम्बन्धी निबन्धों की सूची
## (सन् 1981 जून से सन् 1982 जुलाई तक)

1. "उर्दू कवि दबीर" ताकेशि सुजुकि, **इन्दोगाकु बुक्योगाकु केन्क्यू**, अंक 30-1, 1981
2. "उर्दू कवि अकतर शेरानी और छायावाद" कोजि काताओका, **इन्दोगाक बुक्योगाकु केन्क्यू**, अंक 30-1, 1981
3. "ज्वालामुखी और हिन्दी सम्मेलन" योशिआकि सुजुकि, **होंयाकु नो सेकाइ**, जुलाई, 1982
4. "क्या भारतीय साहित्य अच्छा है ?" योशिआकि सुजुकि **आजिआ बुन्का फोराम**, अंक 4, 1982
5. "भारत के लेखक, पुरुषोत्तमदास टंडन" क्यूया दाइ, **इन्दो बुन्गाकु**, अंक 16, 1982
6. "भारत में साहित्यिक पत्रिका का उत्थान" योशिआकि सुजुकि, **शूकान दोकुशोजिन**, 1981
7. "**भारत के रूपक—प्रेमचन्द की कहानियों में**"—कोजि आरिकावा, 1982
8. "**भारत के महाकवि भ्रतृहरि एवं बिलहाना**" कात्सुहिको कामिमुरा, शिन्जूशा, 1982
9. "**पंजाब के शहरी क्षेत्र में भाषा-संपर्क के कुछ पक्ष—जलंधर शहर के प्रवासियों के सन्दर्भ में—**" (दिल्ली विश्वविद्यालय में पी-एच. डी. के लिए शोध प्रबन्ध) तोमिओ मिजोकामि, 1982
10. "**भजन और लोककथाओं की खोज**" तेइजि साकाता, **शिल्क रोड त्सूशिन**, अंक 1, 1982
11. "**बंगला भाषा वार्तालाप**" त्सुयोशि नारा, दाइगाकु शोरिन, 1982

## अनुवाद

1. मुहम्मद देयेतुल्लाह "**कबीर : हिन्दू मुसलमान एकता का भक्त**" अनु : केइचि मियामोतो, तोहुइ शोबो, 1981
2. भगवतीचरण वर्मा "**बालकृष्ण शर्मा नवीन**" अनु : तोशिओ तानाका, **इन्दो बुन्गाकु** 16, 1982



Scanned with CamScanner

3. जयशंकर प्रसाद "काव्य और कला" अनु : काजुहिको माचिदा, **इन्दो बुन्गाकु** 16, 1982
4. केदारनाथ सिंह की दो कविताओं का अनुवाद, अनु : कात्सुरा शिराइ, **इन्दोबुन्गाकु** 16, 1982
5. मोहन रकेश "मलबे का मालिक" अनु : केइको शिराइ, **इन्दो बुन्गाकु** 16, 1982
6. जैनेन्द्र कुमार "त्याग पत्र" अनु : हिदेआकि इशिदा, **इन्दो बुन्गाकु**, अंक 16, 1982
7. आजम क्रेवी "होली" अनु : ताकेशि सुजुकि **इन्दो बुन्गाकु**, अंक 16, 1982
8. कृश्न चन्दर "एक वेश्या की चिट्ठी" अनु : मासाओ त्सुजुकि, **इन्दो बुन्गाकु**, 16, 1982
9. काशीनाथ सिंह "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य" अनु : ताकाको सुगानुमा, **दाइसान बुन्मेइ**, अप्रैल अंक, 1982
10. काशीनाथ सिंह व शूइचि साए "आधुनिक भारतीय साहित्य एवं जनता" अनु : ताकाको सुगानुमा **दाइसान बुन्मेई**, अप्रैल अंक, 1982
11. मनटो "चिल्लाहट" अनु : कोजि काताओका, **इन्दो बुन्गाकु** अंक 16, 1982
12. राजेन्दर सिंह बेदी "Vitamin B" अनु : हिरोशि हागिता, **इन्दो बुन्गाकु**, अंक 16, 1982
13. **"रवीन्द्रनाथ ठाकुर ग्रन्थावली"** भाग 9—साहित्यालोचना आदि—अनु : तात्सुओ मोरिमोतो आदि, ढाइसान बुनमेइ शा, 1981
14. **"रवीन्द्रनाथ ठाकुर ग्रन्थावली"** भाग 6—नाटक—अनु : शिजुका यामामुरो आदि, दाइसान बुनमेइ शा, 1982
15. **"भारत की प्राचीन कथाएँ"** अनु : युताका इवामोतो, होजोकान, 1982
16. केन्जी मियाज़ावा **"बसंत और यायावर"** अनु : कीयो कुरु व जितेन्द्र राठौर, संभावना प्रकाशन, 1982
17. मोहशित देवी "जगमोहन की मृत्यु" अनु : मासायुकि ओनिशी, **कोल्लानी**, अंक 6, 1982
18. शोमरेश बोस "आत्मा की प्यास" अनु : तामोत्सु नागाइ, **कोल्लानी**, अंक 6, 1982
19. रामप्रसाद सेन की कविता "माँ तुम्हें कभी पुकारूँगा नहीं....." अनु : किकुको सुजुकि, **कोल्लानी**, अंक 6, 1982
20. रवीन्द्रनाथ ठाकुर "शिक्षा हेर-फेर" अनु : मासायुकि उसुदा, **कोल्लानी**, अंक 6, 1982
21. रवीन्द्रनाथ ठाकुर "आवरण" अनु : याए नाकादा, **कोल्लानी**, अंक 6, 1982
22. रवीन्द्रनाथ ठाकुर "धर्म शिक्षा" अनु : हिरोको यामादा, **कोल्लानी** अंक 6, 1982
23. रवीन्द्रनाथ की कविताओं का अनुवाद, अनु : मासायुकि ओनिशी वतामोत्सु नागाइ, **कोल्लानी** अंक 6, 1982

●



Scanned with CamScanner

## इस अंक के लेखक एवं लेखिकाएँ

1. श्री तोमिओ मिज़ोकामि, ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग सहायक प्रोफेसर, 24-6, गोतेनयामा 2 च्योमे, ताकाराजुका-शि, ह्योगो-केन
2. श्री महेन्द्र साइजी माकिनो, विश्व भारती, जापानी विभाग, अध्यापक, 11, Andrews Palli, Santiniketan, West Bengal
3. सुश्री तामाकि मात्सुओका, मासिक पत्र "इन्दो त्सुशिन" सम्पादिका, 20-8 शिमो 2 च्योमे, किता-कु, तोक्यो
4. सुश्री एदेरा कोदामा, ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग छात्रा, 2734, आओमादानि, मिनोओ-शि, ओसाका
5. श्री माकोतो फुजिवारा, ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग छात्र, 2734, आओमादानि, मिनोओ-शि, ओसाका
6. सुश्री चिहिरो तानाका, राष्ट्रीय भाषा विद्यापीठ छात्रा, द्वारा राष्ट्रीय भाषा विद्यापीठ, हिन्दी नगर, वर्धा-452003
7. श्री आकिओ ताकामुरा, रेडियो जापान, हिन्दी विभाग, 2-17 कागा 1 च्योमे, काशिवा-शि, चिबा-केन
8. श्री तेरुमित्सु माएकावा, तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, एम. ए. छात्र (भारतीय राजनीति शास्त्र), 44-29 निशिगाहारा 2 च्योमे, किता-कु, तोक्यो,
9. श्री शिगेओ आराकि, एशियाई सांस्कृतिक संघ अध्यक्ष, 249-7 मोमुरा, इनागि-शि, तोक्यो
10. श्री योशिआकि सुजुकि, सम्पादक, 5-9 मात्सुयामा 3 च्योमे, कियोसे-शि, तोक्यो

## विशेष सहयोगी

1. श्री मासुरो त्सुजिमुरा, 4-5 हिगाशिकानामाचि 4 च्योमे, कात्सुशिका-कु, तोक्यो,
2. श्री कैलाशचन्द्र पाण्डे, वाइ 81, हौज खास, नई दिल्ली— 16
3. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा



Scanned with CamScanner